दिगम्बर जैनों में जागृति के प्रश्न

व

शास्त्रार्थ की अपील

प्रार्थी:--

उजागर मल जैन

सिद्धान्त प्रचार विभागाध्यक्ष

भा० जै० शि० प्र० समिति.

जयपुर.

बालचन्द्र यन्त्रालय, जयपुर.

* श्रीः *

सर्व साधारण को यह बात अविदित नहीं है कि इस समय भारतवर्ष की हर एक धर्म्म समाज में उन्नति की जागृति हो रही है, और नेतागण अपने २ विचारों के अनुसार समाज को निश्चित ध्येय की ओर लेजारहे हैं। जैन धर्म्मावलम्बियों में भी समय के बलसे कुछ २ जीवन के चिन्ह दिखलाई देनेलगे हैं, और विशेष करके अजैन लोगोंके 'नास्तिक, वाममार्गी, नग्न-अश्लील मूर्त्युपासक" आदि हृदय विदारक तानों से तो कतिपय अनुभवी मर्मज्ञ जैन विद्वानों तथा नवयुवकों का खून इतने जोश में आरहा है कि, भारत वर्ष में ही क्या, जब तक समस्त भूमण्डलमें जैन धर्म्म का झंडा न फहरा देवें, तब तक वे अपने मनुष्य जन्मको निष्फल समझते हैं। इस धर्म्म प्रचारके लिए कोई ब्रह्मचर्य प्रतिमा धारण कर रहे हैं, कोई परिग्रह परिमाणादि करके अपने जीवन को समर्पण कर रहे हैं, और कई धर्म्म वीर श्रीअकलंक देवको आदर्श रखते हुए बाल ब्रह्मचारी ही रह कर धर्म्म सेवाकी प्रतिज्ञा कर रहे हैं। ऐसे पुनरुत्थान के समय में प्राचीन शास्त्रोंका अवलोकन,

धर्म्म और रूढिका पृथक्करण, तथा ऋषि प्रणीत मार्गका शब्द व क्रिया द्वारा प्रचार होरहा है। अनेक प्राचीन शास्त्र जिनका नाम भी कोई नहीं जानता था भण्डारों से बाहर लाये जाते हैं और हस्त लिखित वा मुद्रित होकर घरोंमें पहुँच रहे हैं, तथा इन्हीं प्राचीन शास्त्रोंके आधार पर लौकिक वा पारलौकिक व्यवहार प्रणाली का निर्म्माण होरहा है।

इस आधुनिक विद्या प्रचार से चहुँ ओर खलबली मचगई है और स्थान २ पर प्रगट वा अप्रगट दो दल होरहे हैं। एक दल गतानुगतिकों का है जिसका कथन है कि बिना 'कथं कस्मात्' किये हुए पुरानी लीकों पर चलेचलो, पञ्चम काल है, जैन धर्म्म की हानि ही हानि होगी, सम्यक्त्वी तो कोई हो ही नहीं सकता, प्रचलित लीक को छोड़ कर दूसरी लीक निकालना ही धर्म्म विरुद्ध है और उससे धर्म्म का ह्रास ही ह्रास होगा। दूसरा दल विचारशील जिज्ञासुओं का है जो कहता है कि ऐसा किसी भी आचार्य का वचन नहीं कि धर्म्म की सतत हानि ही होगी और बीच २ में इस हानि की गाड़ी का इंजिन कहीं भी पानी लेने

को न ठहरेगा; यह अवसर्पिणी काल है, सर्प की गति के अनुसार चढ़ाव उतार होगा; सरकार अंग्रेज़ के शान्तिमयी राज्य में सब चिन्ह चढ़ाव के हैं। अतः पुरानी अनावश्यक लीकों को त्याग कर आचार्यों के निर्दिष्ट पथ में नवीन लीकें बनानी चाहिएँ। मार्ग तो वीतराग कथित ही रहेगा परन्तु अब उसमें चलने के लिए द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार वाहन और ही प्रकारके बनाने चाहिएँ, पुराने वाहन बिगड़ गये, मरम्मत से भी नहीं काम देते, रात दिन भय लगा रहता है कि कहीं गिर कर आङ्गोपाङ्ग न तुड़ा बैठें जिससे पैदल चलना भी असम्भव होजावे। ऐसे लोग आर्ष वाक्यों को ही मानते हैं, और भाषाकारों वा अन्य लोगों के वचनों की प्रतीति भी वहाँ ही तक करते हैं, जहाँ तक कि वे आर्ष वाक्यों की कसोटी पर निर्दोष सिद्ध हों।

ऐसे समय में साधारण लोग बड़े असमंजस में पड़े हुए हैं और दुविधा में हैं कि किस दल की बातको ग्रहण करें। दोनों ही पक्ष के लोग धर्म्म धर्म्म की आवाज़ पुकार रहे हैं। अधर्मी

कोई भी अपने को नहीं बताता। वर्तमान में संस्कृत जानने वालों की तो क्या कथा केवल भाषा के भी २० प्रतिशतक विद्वान् कठिनता से मिलेंगे, और वे भी ऐसे जो रात दिन अपनी उदर पूर्ति व गृहस्थ पालन से ही छुटकारा नहीं पाते; फिर ऐसे गम्भीर विषयों पर विचार करने का तो उन को अवसर ही कहाँ मिले। दोनों दल वाले भोले लोगों को अपनी २ ओर खींच रहे हैं, और लोग जिसका ज़ोर देखते हैं उस ही की सी कहने लगते हैं। गंगा कहिए गंगादास, जमना बोले जमनादास की सी दशा दिखलाई दे रही है। ऐसे नाजुक समय में बड़ी ज़ुरूरत है कि दोनों दल के मुखिया विद्वानों का कहीं पर सम्मेलन हो और परस्पर में शास्त्रार्थ होकर निर्णय कर लिया जावे कि किस दल वालों की बात आगम प्रमाण से सिद्ध है और आधुनिक द्रव्य, क्षेत्र, काल और भावके अनुसार क्या कर्तव्य है। इससे समाज का संघटन बना रहेगा, लोग पक्षापक्ष के धकोंसे बच जायँगें और शान्तिसे उन्नति कार्य क्रम की गति होती रहेगी। ऐसा न होगा तो घर २ में मत

भेद होजावेंगे और स्थान २ पर विरोधाग्नि प्रबल होकर जैनियों के समुदाय बलको नष्ट कर देगी। निष्पक्ष बन्धुओं! जैन धर्मका मुख्य उपदेश शान्ति है, यदि आपको शान्ति धर्म्म बचाना है तो इन दोनों दलोंका खुले तौरसे शास्त्रार्थ करवाइए और फिर सत्य निर्णय पर कटिबद्ध होकर जीवों को कल्याण मार्गमें लगाइए। मैंने दोनों दलों के कई पंडित जनोंसे वार्तालाप करके निम्न लिखित विषयों को मुख्यतः विवादग्रस्त समझा हैः—

(१) वीतराग की प्रतिमा के केशर लगाना और उस पर पञ्चामृत का अभिषेक करना धर्म्म विरुद्ध है वा क्या? यदि धर्म्म विरुद्ध है, तो ऐसा करने वाले जैन हैं या जैनाभास; और यदि यह क्रियाएँ धर्म्म शास्त्र सम्मत हैं तो इनका विरोध करने वाले उत्सूत्री होने के कारण पतित हुए वा नहीं?

(२) क्षेत्रपाल, पद्मावती आदि रागी द्वेषी देवताओं की मूर्तियाँ मन्दिरों में स्थापन करना और पूजना, मिथ्यात्व है वा क्या? और यदि

मिथ्यात्व है, तो ऐसा करने वाले मिथ्यात्वी, जैन हैं वा जैनाभास ?

(३) भट्टारक लोग निर्ग्रन्थ हैं वा सग्रन्थ, और इनको मुनिकी तरह पूजना व आहारादि देना शास्त्र सम्मत है वा शास्त्र से विपरीत ? यदि शास्त्र विपरीत है, तो भट्टारक लोग वीतराग धर्म्मोच्छेदक हुए वा नहीं और उनके उपासक जैन हैं वा अजैन। और यदि शास्त्र सम्मत है तो भट्टारकों को न मानने वाले कषायी और कदाग्रही हैं वा शुद्ध धर्म्मी ?

(४) भट्टारक व पांडियोंके लिए और गृहस्थों के लिए प्रायश्चित विधि एक ही है वा भिन्न २ ?

(५) यदि कोई भट्टारक मदिरापान व वेश्या सेवन करता हो और भट्टारक पदवी पर आरूढ़ हो तो उसके पूजने वाले और मुनिवत् आहार देने वाले पतित हैं वा शुद्ध और उनसे रोटी बेटी व्यवहार करने वाले धर्म्म भ्रष्ट हैं वा शुद्ध धर्म्मी ?

(६) भट्टारकों की इस समय आवश्यकता है या नहीं ?

(७) धर्म से सम्बन्ध जातिका है वा वर्ण का ?

(८) अग्रवाल, खराडेलवाल, ओसवाल, परवार आदि जातियों का एक वर्ण है वा भिन्न २, यदि समान वर्ण है तो फिर इन जातियों के समान धर्मी परस्पर में रोटी बेटी व्यवहार क्यों न करें ? और ऐसा करने वालों का कोई अन्य वर्ण हो जाता है क्या ?

(९) अग्रवाल, खराडेलवाल आदि जातियों के जैन एक दूसरे के बनाए हुए मन्दिरोंमें पूजन, परिच्चाल, प्रतिमा स्पर्श आदि करते हैं वा नहीं; यदि करते हैं, तो परस्पर में रोटी बेटी व्यवहार करने वाले ऐसे जैन भी प्रतिमा स्पर्श कर सकते हैं वा नहीं ?

(१०) उपरोक्त परस्पर में सम्बन्ध करने वाले व्यक्ति मुनि हो सकते हैं वा नहीं ?

(११) हलुआई, दर्ज़ी, सुनार, सब्ज़ी बेचने वालों को शास्त्रमें शूद्र लिखा है। यदि खराडेल-

वाल आदि जातियों में कोई ऐसे कर्म करें तो वे शूद्र हैं वा क्या ? और उनसे रोटी बेटी व्यवहार करने वाले पतित हैं वा शुद्ध ?

(१२) मांस मदिरा खाने वाले भी जैन धर्म के श्रद्धानी हो सकते हैं वा नहीं ? और जैनियों में मांस मदिरा खाने वाले भी हैं वा नहीं, यदि हैं तो वे जैन हैं कि अजैन ?

(१३) श्रावक खण्डेलवाल आदि जातियों में से यदि कोई मांस मदिरा खाते हों और उनसे जाति वाले रोटी बेटी व्यवहार भी करें तो वह सर्व जाति धर्म भ्रष्ट व पतित है वा शुद्ध ?

(१४) शास्त्रोंमें उच्च वर्ण वालोंके लिए असि, मसि, कृषि, वाणिज्य आदि ही जीविका कर्म लिखे हैं, इनके अतिरिक्त अन्य जीविका के उपाय करने वाले शूद्र होते हैं। आज कल कन्याओं का सौदा ठहर कर विवाह होता है, यहां तक कि लोग अपनी मांगें बेंच कर मनमाना फ़ायदा उठाते हैं; बहुत से लोग इसमें दलाली का कार्य भी करते हैं। अब यह व्यापार कौनसा कर्म हुआ;

और ऐसा करने वाले किस वर्णके समझे जावेंगे, तथा उनसे रोटी बेटी व्यवहार करने वाले पतित हैं वा शुद्ध ?

(१५) श्वेताम्बरी लोग जैन हैं वा अजैन, यदि अजैन हैं तो अजैनों को जिन बिम्ब स्पर्श करने देना धर्म्म है वा अधर्म्म; और श्वेताम्बर आम्नाय वालों से दिगम्बर आम्नायवालों का रोटी बेटी व्यवहार होना धर्म्म विरुद्ध है वा क्या ?

(१६) श्वेताम्बरों की स्पर्श की हुई प्रतिमा पूज्य है वा अपूज्य; यदि पूज्य है, तो श्वेताम्बरों से रोटी बेटी व्यवहार करने वाले प्रतिमाओं का पूजन परिचाल कर सकते हैं वा नहीं ?

(१७) चारित्र पर दर्शन कितना निर्भर है ? और दर्शन भ्रष्ट व चारित्र भ्रष्ट इन दोनों में जैनी कौन है ?

(१८) कल्पना कीजिए कि, किसी व्यक्ति ने कोई धर्म्म च्युति का कार्य कर लिया और वह सर्व साधारण को विदित भी होगया, परन्तु

वा दो वर्ष तक उसका जाति बहिष्कार नहीं हुआ, तो इतने काल पर्यंत जाति ने जो उसके साथ खान पानादि व्यवहार किया उससे समस्त जाति पतित व प्रायश्चित दगड देने योग्य हुई वा नहीं? यदि हुई तो उसका प्रायश्चित क्या होता है?

(१९) निर्माल्य द्रव्य का लक्षण क्या है? मन्दिरों के भण्डारों का द्रव्य निर्माल्य कहा जाता है, यदि उस द्रव्य को अधिकारी पंच अपने विवाह आदि कार्यों में लगाकर जाति भाइयों की लड्डुओं से तृप्ति करें, तो ऐसे धन से बने हुए पकवानों के पचाने वाले शुद्ध हैं वा अशुद्ध, यदि अशुद्ध हैं तो उनकी शुद्धि कैसे हो सकती है?

(२०) जिन जैन खण्डेलवाल आदि जातियों में विधवाएँ पुरुष सेवन करके भ्रूण हत्या कर डालती हैं, जिनके मुक़दमें पुलिस में भी होजातेहैं, ऐसी विधवाएँ तथा उनके सेवी पतित हो जाते हैं वा शुद्ध ही रहते हैं, और ऐसों से रोटी बेटी व्यवहार करने वाली जाति निर्मल है वा कलङ्कित?

(२१) यावज्जीवन पतित कौन होते हैं और वे कौन से वर्ण के समझे जाते हैं?

(२२) कालान्तर में वर्ण से वर्णान्तर होताहै वा नहीं?

(२३) कच्ची व पक्की रसोई का भेद कौन से आर्ष वाक्यों में है? मल मूत्र त्याग आदिके स्थानों में पक्की खाने का औचित्य व कच्ची का निषेध किस ग्रन्थानुसार है. और कच्ची पक्की दोनों का समान व्यवहार करने वाले पतित हैं वा क्या और किस शास्त्र प्रमाण से?

(२४) प्रायश्चित दण्ड देने का अधिकारी कौन होताहै। व्यभिचारी, वेश्यागामी, व्यसनियों के आश्रयदाता, मदिरासेवी, झूठी हलफ उठाने वाले, निर्माल्य खाने वाले आदि धर्म भ्रष्ट भी प्रायश्चित दण्ड देकर पतितों को शुद्ध कर सकते हैं वा नहीं?

(२५) अजैनों को जैनी बनाना धर्म की उन्नति है वा अवनति ?

(२६) जैन धर्म में भिन्न २ वर्णों के संस्कार हैं वा नहीं? यदि हैं, तो संस्कार न करने वाले कौन से वर्ण में समझे जावेंगे?

(२७) सदासुखजी ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार की टीका में स्थापना के विषय में गुमान पंथियों को एकांती आगम ज्ञान रहित पक्षपाती लिखा है उनका लिखना धर्म्मानुकूल है वा कषायवश, यदि धर्म्मानुकूल है तो गुमान पंथियों की प्रवृत्ति उत्सूत्रियों की तरह कल्पित है वा नहीं। (मुद्रित रत्नकरण्ड पृष्ठ ११६)

(२८) दीक्षा व व्रत प्रतिमादि ग्रहण करने की शास्त्र में क्या विधि है? दीक्षा गुरु कौन हो सकता है?

ब्रह्मचर्य प्रतिमा के लिए भी गुरुदीक्षा की आवश्यकता होती है क्या? यदि होती है तो ब्रह्मचर्य प्रतिमाधारी भी गुरु हो सकता वा नहीं ?

(२९) बिम्ब प्रतिष्ठा कौन गृहस्थ करा सकता है, और प्रतिष्ठाचार्य कौन होना चाहिए, तथा कौनसा प्रतिष्ठा पाठ सर्व मान्य हो सकता है? आज कल हर कोई व्यक्ति प्रतिष्ठाचार्य बन बैठता है, इस में उन्नति है वा अवनति?

(३०) प्रतिष्ठा के लिए प्रतिमाएँ कैसी होनी चाहिएँ? आज कल लोगों को प्रतिष्ठार्थ प्रतिमा

पसन्द कराने के लिए प्रतिष्ठाचार्यों को गुप्त भेंट देनी पड़ती है, यह उचित है क्या? और विपक्ष में क्या प्रबन्ध सम्भव है?

(३१) जहाज़ में बैठ कर समुद्र यात्रा करने और इंगलैन्ड आदि देशों में जाकर विद्याध्ययन वा व्यापारादि करने अथवा जैन धर्म का प्रचार करने से कोई व्यक्ति पतित व धर्म्मच्युत होजाता है वा जैनी ही बना रहता है? ऐसे लोगोंका जाति बहिष्कार उचित है वा अनुचित? और भारत में ही रहकर जो धनिक जैनी वेश्याओं तथा गौराङ्गनाओं को अर्द्धाङ्गिनी बनालेते हैं वे विदेश यात्रा करने वालों के समान हैं वा असमान?

इस प्रकार से मेरी समझ में जो प्रश्न निश्चित हुए उनका उल्लेख किया है, यदि कोई महाशय और अधिक करना चाहें तो कर सकते हैं। परन्तु ऐसी शङ्काओं का समाधान अनिवार्य है। मैं ने न्याय वाचस्पति स्याद्वादवारिधि पण्डित गोपालदासजी मुरेना, बाबू अर्जुनलालजी सेठी जयपुर, न्यायाचार्य पण्डित माणिक्यचन्दजी मुरेना, पंडित

लालारामजी बनारस, पंडित वंशीधरजी शोलापुर, पण्डित खूबचन्दजी मुम्बई, पण्डित पन्नालालजी कासलीवाल मुम्बई, मुख्तार जुगलकिशोरजी व बाबू सूर्यभानजी देवबन्द, आदि महाशयों से पूछा था तो वे शास्त्र विचार तथा सत्य निर्णय के लिए तैयार हैं। मैं आशा करता हूँ कि अन्य पण्डित जन भी धर्म रक्षा के हेतु अपनी सम्मति प्रदान करेंगे जिससे स्थान, तिथि व समय नियत होकर सर्व साधारण को सूचना दी जावे।

मैं अन्तमें यह भी निवेदन कर देना उचित समझता हूँ कि जयपुर ऐसे शास्त्रार्थ के लिए बहुत ही योग्य स्थान है।

जैन जातिमें शान्ति का अभिलाषी—

उजागरमल जैन

सिद्धान्त प्रचार विभागाध्यक्ष

भा० जै० शि० प्र० समिति,

जयपुर.



हे जनार्दन ! अपनी शक्ति और अपनी विभूतिका वर्णन मुझसे फिर विस्तारपूर्वक कीजिए । आपकी अमृत-मय वाणी सुनते-सुनते तृप्ति होती ही नहीं । १८

श्रीभगवान बोले—

हे कुरुश्रेष्ठ ! अच्छा, मैं अपनी मुख्य-मुख्य दिव्य विभूतियां तुझे कहूंगा । उनके विस्तारका अंत तो है ही नहीं । १९

हे गुडाकेश ! मैं सब प्राणियोंके हृदयमें विद्यमान आत्मा हूं । मैं ही भूतमात्रका आदि, मध्य और अंत हूं । २०

आदित्योंमें विष्णु मैं हूं, ज्योतियोंमें जगमगाता सूर्य मैं हूं, वायुओंमें मरीचि मैं हूं, नक्षत्रोंमें चंद्र मैं हूं । २१

वेदोंमें सामवेद मैं हूं, देवोंमें इंद्र मैं हूं, इंद्रियोंमें मन मैं हूं और प्राणियोंका चेतन मैं हूं । २२

रुद्रोंमें शंकर मैं हूं, यक्ष और राक्षसोंमें कुबेर मैं हूं, वसुओंमें अग्नि मैं हूं, पर्वतोंमें मेरु मैं हूं । २३

हे पार्थ ! पुरोहितोंमें प्रधान बृहस्पति मुझे समझ । सेनापतियोंमें कार्तिक स्वामी मैं हूं और सरोवरोंमें सागर मैं हूं । २४